INTERNATIONAL JOURNAL OF SCIENTIFIC PROGRESS AND RESEARCH (IJSPR) ISSN: 2349-4689
Issue 159, Volume 59, Number 01, May 2019

भारतीय संस्कृति का पथ प्रदर्शक भारतीय दर्शन

नीतू बारमाशे[1], डॉ. ज्ञान शंकर तिवारी[2], डॉ. भावना ठाकुर[3]

[1]शोधार्थी, एम .एससी., [2]निर्देशक, [3]विभागाध्यक्षा

[1,2,3]योग एवं मानव चेतना विभाग, अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल

सार - भारतीय संस्कृति में मानव जीवन का लक्ष्य 'दर्शन' है! उसी की परिणिति के लिए वह आचरणो द्वारा गतिशील रहता है ! परमतत्व मोक्ष या अपने आराध्य का साक्षात्कार ही जीवन का लक्ष्य है! भारत में वैदिक काल से ही दर्शन का प्रादुर्भाव दिखाई देने लगता है,। भारतीय दर्शनों में छः दर्शन अधिक प्रसिद्ध हुए-महर्षि गौतम का 'न्याय', कणाद का 'वैशेषिक', कपिल का 'सांख्य', पतंजलि का 'योग', जैमिनि की पूर्व मीमांसा अथवा 'वेदान्त'। ये सब वैदिक दर्शन के नाम से जाने जाते हैं, क्योंकि ये वेदों की प्रामाणिकता को स्वीकार करते हैं। जो दर्शन वेदों की प्रमाणिकता को स्वीकार करते हैं वे आस्तिक कहलाते हैं और जो स्वीकार नहीं करते उन्हें नास्तिक की संज्ञा दी गई है। किसी भी दर्शन का आस्तिक या नास्तिक होना परमात्मा के अस्तित्व को स्वीकार अथवा अस्वीकार करने पर निर्मम न होकर वेदों की प्रमाणिकता को स्वीकार अथवा अस्वीकार करने पर निर्भर है। यहाँ तक की बौद्ध धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों का भी उद्गम उपनिषदों में है; यद्यपि उन्हें सनातन धर्म नहीं माना जाता है, क्योंकि वे वेदों की प्रामाणिकता को स्वीकार नहीं करते। संस्कृति हमारे जीने और सोचने की विधि में हमारी प्रकृति की अभिव्यक्ति है। यह हमारे साहित्य में, धर्मिक कार्यो में, मनोरंजन और आनन्द प्राप्त करने के तरीकों में भी देखी जा सकती हैं। संस्कृति के दो भिन्न उप-विभाग होते हैं भौतिक और अभौतिक। भौतिक संस्कृति उन विषयों से जुड़ी है जो हमारे जीवन के भौतिक पक्षों से सम्बण् हैं, जैसे हमारी वेशभूषा, भोजन, घरेलू सामान आदि। अभौतिक संस्कृति का सम्बध् विचारों, आदेशों, भावनाओं और विश्वासों से है। संस्कृति एक स्थान से दूसरे स्थान तथा एक देश से दूसरे देश में बदलती रहती है। इसका विकास एक स्थानीय, क्षेत्राीय अथवा राष्टींय संदर्भ में विद्यमान ऐतिहासिक प्रिव्या पर आधारित होता है।

मुख्य शब्द – योग, संस्कृति, मानव, परमात्मा, न्याय, वैशेषिक, वेदान्त, सांख्य, मीमांसा।

I. परिचय

1.1 संस्कृति

मनुष्य की अमूल्य निधि उसकी संस्कृति है। संस्कृति एक ऐसा पर्यावरण है, जिसमें रहकर व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी बनता है, और प्राकृतिक पर्यावरण को अपने अनुकूल बनाने की क्षमता अर्जित करता है। 'होबेल' का मत है, 'वह संस्कृति ही है, जो एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्तियों से, एक समूह को दूसरे समूहों से और एक समाज को दूसरे समाजों से अलग करती है।'

- संस्कृति का अर्थ

संस्कृति शब्द का प्रयोग हम दिन-प्रतिदिन के जीवन में (अक्सर) निरन्तर करते रहते हैं। साथ ही संस्कृति शब्द का प्रयोग भिन्न-भिन्न अर्थों में भी करते हैं।

उदाहरण के तौर पर हमारी संस्कृति में यह नहीं होता तथा पश्चिमी संस्कृति में इसकी स्वीकृति है। समाजशास्त्र विज्ञान के रूप में किसी भी अवधारणा का स्पष्ट अर्थ होता है जो कि वैज्ञानिक बोध को दर्शाता है। अत: "संस्कृति" का अर्थ समाजशास्त्रीय अवधारणा के रूप में "सीखा हुआ व्यवहार" होता है। अर्थात् कोई भी व्यक्ति बचपन से अब तक जो कुछ भी सीखता है!

उदाहरण के तौरे पर खाने का तरीका, बात करने का तरीका, भाषा का ज्ञान, लिखना-पढना तथा अन्य योग्यताएँ, यह संस्कृति है!

संस्कृति जीवन की विधि है। जो भोजन आप खाते हैं, जो कपड़े आप पहनते हैं, जो भाषा आप बोलते हैं और जिस भगवान की आप पूजा करते हैं, ये सभी संस्कृति के पक्ष हैं। सरल शब्दों मे हम कह सकते हैं कि संस्कृति उस विधि का प्रतीक है जिसमें हम सोचते हैं और कार्य करते हैं। इसमें वे चीजें भी सम्मिलित हैं जो हमने एक समाज के सदस्य के नाते उनराधिकार में प्राप्त की हैं। एक सामाजिक वर्ग के सदस्य के रूप में मानवों की सभी उपलिब्ध्या संस्कृति कही जा सकती हैं। कला, संगीत, साहित्य, वास्तुविज्ञान, शिल्पकला, दर्शन, धर्म और विज्ञान सभी संस्कृति के पक्ष हैं। तथापि संस्कृति में रीतिरिवाज, परम्पराए!, पर्व, जीने के तरीके, और जीवन के विभिन्न पक्षों पर व्यक्ति विशेष का अपना दृष्टिकोण भी सम्मिलित हैं।

इस प्रकार संस्कृति मानव जनित पर्यावरण से सम्बन्ध् रखती है जिसमें सभी भौतिक और अभौतिक उत्पाद एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्रदान किये जाते हैं। सभी समाज वैज्ञानिकों में एक सामान्य सहमति है कि संस्कृति में मनुष्यों द्वारा प्राप्त सभी आन्तरिक और बां व्यवहारों के तरीके समाहित हैं। ये चिह्नों द्वारा भी स्थानान्तरित किए जा सकते हैं जिनमें मानवसमूहों की विशिष्ट उपलिब्ध्या भी समाहित हैं। इन्हें शिल्पकलाछतियों द्वारा मूर्त रूप प्रदान किया जाता है। अत: संस्कृति का मूल केन्द्र बिन्दु उन सूक्ष्म विचारों में निहित है जो एक समूह में ऐतिहासिक रूप से उनसे सम्बण् मूल्यों सहित विवेचित होते रहे हैं। संस्कृति वह है जिसके मामयम से लोग परस्पर सम्प्रेषण करते हैं, विचार करते हैं और जीवन के विषय में अपनी अभिवृतियों और ज्ञान को विकसित करते हैं।

संस्कृति हमारे जीने और सोचने की विधि में हमारी प्रकृति की अभिव्यक्ति है। यह हमारे साहित्य में, धर्मिक कार्यो में, मनोरंजन और

आनन्द प्राप्त करने के तरीकों में भी देखी जा सकती हैं। संस्कृति के दो भिन्न उप-विभाग होते हैं भौतिक और अभौतिक। भौतिक संस्कृति उन विषयों से जुड़ी है जो हमारे जीवन के भौतिक पक्षों से सम्बण् हैं, जैसे हमारी वेशभूषा, भोजन, घरेलू सामान आदि। अभौतिक संस्कृति का सम्बध् विचारों, आदेशों, भावनाओं और विश्वासों से है।

1.2 संस्कृति की परिभाषाये

• सामान्य अर्थ में, संस्कृति सीखे हुए व्यवहारों की सम्पूर्णता है। लेकिन संस्कृति की अवधारणा इतनी विस्तृत है कि उसे एक वाक्य में परिभाषित करना सम्भव नहीं है। वास्तव में मानव द्वारा अप्रभावित प्राकृतिक शक्तियों को छोड़कर जितनी भी मानवीय परिस्थितियाँ हमें चारों ओर से प्रभावित करती हैं, उन सभी की सम्पूर्णता को हम संस्कृति कहते हैं, और इस प्रकार संस्कृति के इस घेरे का नाम ही 'सांस्कृतिक पर्यावरण' है।

• दूसरे शब्दों में, 'संस्कृति एक व्यवस्था है, जिसमें हम जीवन के प्रतिमानों, व्यवहार के तरीकों, अनेकानेक भौतिक एवं अभौतिक प्रतीकों, परम्पराओं, विचारों, सामाजिक मूल्यों, मानवीय क्रियाओं और आविष्कारों को शामिल करते हैं।'

• सर्वप्रथम वायु पुराण में 'धर्म', 'अर्थ', 'काम', तथा 'मोक्ष' विषयक मानवीय घटनाओं को 'संस्कृति' के अन्तर्गत समाहित किया गया। इसका तात्पर्य यह हुआ कि मानव जीवन के दिन-प्रतिदिन के आचार-विचार, जीवन शैली तथा कार्य-व्यवहार ही संस्कृति कहलाती है।

1.3 संस्कृति की विशेषताएँ

भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

- प्राचीनता

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। मध्य प्रदेश के भीमबेटका में पाये गये शैलचित्र, नर्मदा घाटी में की गई खुदाई तथा कुछ अन्य नृवंशीय एवं पुरातत्त्वीय प्रमाणों से यह सिद्ध हो चुका है कि भारत भूमि आदि मानव की प्राचीनतम कर्मभूमि रही है।

- निरन्तरता

भारतीय संस्कृति की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि हज़ारों वर्षों के बाद भी यह संस्कृति आज भी अपने मूल स्वरूप में जीवित है, जबकि मिस्र, असीरिया, यूनान और रोम की संस्कृतियों अपने मूल स्वरूप को लगभग विस्मृत कर चुकी हैं। भारत में नदियों, वट, पीपल जैसे वृक्षों, सूर्य तथा अन्य प्राकृतिक देवी - देवताओं की पूजा अर्चना का क्रम शताब्दियों से चला आ रहा है। देवताओं की मान्यता, हवन और पूजा-पाठ की पद्धतियों की निरन्तरता भी आज तक अप्रभावित रही हैं।

- लचीलापन एवं सहिष्णुता

भारतीय संस्कृति की सहिष्णु प्रकृति ने उसे दीर्घ आयु और स्थायित्व प्रदान किया है। संसार की किसी भी संस्कृति में शायद ही इतनी सहनशीलता हो, जितनी भारतीय संस्कृति में पाई जाती है। भारतीय हिन्दू किसी देवी - देवता की आराधना करें या न करें, पूजा-हवन करें या न करें, आदि स्वतंत्रताओं पर धर्म या संस्कृति के नाम पर कभी कोई बन्धन नहीं लगाये गए।

- ग्रहणशीलता

भारतीय संस्कृति की सहिष्णुता एवं उदारता के कारण उसमें एक ग्रहणशीलता प्रवृत्ति को विकसित होने का अवसर मिला। वस्तुत: जिस संस्कृति में लोकतन्त्र एवं स्थायित्व के आधार व्यापक हों, उस संस्कृति में ग्रहणशीलता की प्रवृत्ति स्वाभाविक रूप से ही उत्पन्न हो जाती है। हमारी संस्कृति में यहाँ के मूल निवासियों ने समन्वय की प्रक्रिया के साथ ही बाहर से आने वाले शक, हूण, यूनानी एवं कुषाण जैसी प्रजातियों के लोग भी घुलमिल कर अपनी पहचान खो बैठे।

- आध्यात्मिकता एवं भौतिकता का समन्वय

भारतीय संस्कृति में आश्रम - व्यवस्था के साथ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जैसे चार पुरुषार्थों का विशिष्ट स्थान रहा है। वस्तुत: इन पुरुषार्थों ने ही भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिकता के साथ भौतिकता का एक अदभुत समन्वय कर दिया। हमारी संस्कृति में जीवन के ऐहिक और पारलौकिक दोनों पहलुओं से धर्म को सम्बद्ध किया गया था। धर्म उन सिद्धान्तों, तत्त्वों और जीवन प्रणाली को कहते हैं, जिससे मानव जाति परमात्मा प्रदत्त शक्तियों के विकास से अपना लौकिक जीवन सुखी बना सके तथा मृत्यु के पश्चात् जीवात्मा शान्ति का अनुभव कर सके।

- अनेकता में एकता

भौगोलिक दृष्टि से भारत विविधताओं का देश है, फिर भी सांस्कृतिक रूप से एक इकाई के रूप में इसका अस्तित्व प्राचीनकाल से बना हुआ है। इस विशाल देश में उत्तर का पर्वतीय भू-भाग, जिसकी सीमा पूर्व में ब्रह्मपुत्र और पश्चिम में सिन्धु नदियों तक विस्तृत है। इसके साथ ही गंगा, यमुना, सतलुज की उपजाऊ कृषि भूमि, विन्ध्य और दक्षिण का वनों से आच्छादित पठारी भू-भाग, पश्चिम में थार का रेगिस्तान, दक्षिण का तटीय प्रदेश तथा पूर्व में असम और मेघालय का अतिवृष्टि का सुरम्य क्षेत्र सम्मिलित है। इस भौगोलिक विभिन्नता के अतिरिक्त इस देश में आर्थिक और सामाजिक भिन्नता भी पर्याप्त रूप से विद्यमान है। वस्तुत: इन भिन्नताओं के कारण ही भारत में अनेक सांस्कृतिक उपधाराएँ विकसित होकर पल्लवित और पुष्पित हुई हैं।

II. भारतीय दर्शन एवं संस्कृति की अवधारणा

2.1 दर्शन का अर्थ

दर्शन शब्द संस्कृत की दृश् धातु से बना है- ''दृश्यते यथार्थ तत्वमनेन'' अर्थात् जिसके द्वारा यथार्थ तत्व की अनुभूति हो वही दर्शन है। अंग्रेजी के शब्द फिलॉसफी का शाब्दिक अर्थ ''ज्ञान के प्रति अनुराग'' होता है। भारतीय व्याख्या अधिक गहराई तक पैठ बनाती है, क्योंकि भारतीय अवधारणा के अनुसार दर्शन का क्षेत्र केवल ज्ञान तक सीमित न रहकर समग्र व्यक्तित्व को अपने आप में समाहित करता है। दर्शन चिन्तन का विषय न होकर अनुभूति का विषय माना जाता है। दर्शन के द्वारा बौद्धिक तश्प्ति का आभास न होकर समग्र व्यक्तित्व बदल जाता

है। यदि आत्मवादी भारतीय दर्शन की भाषा में के कहा जाये तो यह सत्य है कि दर्शन द्वारा केवल आत्म-ज्ञान ही न होकर आत्मानुभूति हो जाती है। दर्शन हमारी भावनाओं एवं मनोदणाओं को प्रतिबिम्बित करता है और ये भावनायें हमारे कार्यो को नियंत्रित करती है।

- दर्शन का भारतीय सम्प्रत्यय

भारत में दर्शन का उद्गम असन्तोष या अतश्प्ति से माना जाता है। हम वर्तमान से असन्तुष्ट होकर श्रेण्ठतर की खोज करना चाहते है। यही खोज दार्शनिक गवेशणा कहलाती है। दर्शन के विभिन्न अर्थ बताये गये हैं।

उपनिषद् काल में दर्शन की परिभाषा थी-जिसे देखा जाये अर्थात् सत्य के दर्शन किये जाये वही दर्शन है। (दृश्यते अनेन इति दर्शनम्-उपनिषद) डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार- दर्शन वास्तविकता के स्वरूप का तार्किक विवेचन है।

- दर्शन का पाश्चात्य सम्प्रत्यय

पश्चात्य जगत में दर्शन का सर्वप्रथम विकास यूनान में हुआ। प्रारम्भ में दर्शन का क्षेत्र व्यापक था परन्तु जैसे-जैसे ज्ञान के क्षेत्र मे विकास हुआ दर्शन अनुशासन के रूप में सीमित हो गया।

1. प्लेटो के अनुसार- जो सभी प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा रखता है और सीखने के लिये आतुर रहता है कभी भी सन्तोष करके रूकता नहीं, वास्तव में वह दार्शनिक है। उनके ही शब्दों में- ''पदार्थों के सनातन स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करना ही दर्शन है।''

2. अरस्तु के अनुसार- ''दर्शन एक ऐसा विज्ञान है जो परम तत्व के यथार्थ स्वरूप की जॉच करता है।''

3. कान्ट के अनुसार-''दर्शन बोध क्रिया का विज्ञान और उसकी आलोचना है।'' परन्तु आधुनिक युग में पश्चिमी दर्शन में भारी बदलाव आया है, अब वह मूल तत्व की खोज से ज्ञान की विभिन्न शाखाओं की तार्किक विवेचना की ओर प्रवृत्त है। अब दर्शन को विज्ञानों का विज्ञान और आलोचना का विज्ञान माना जाता है।

4. कामटे के शब्दों में- ''दर्शन विज्ञानों का विज्ञान है।''

5. हरबार्ट स्पेन्सर के शब्दो में ''दर्शन विज्ञानों का समन्वय या विश्व व्यापक विज्ञान है।''

- दर्शन का वास्तविक सम्प्रत्यय

ऊपर की गयी चर्चा से यह स्पष्ट है कि भारतीय दृष्टिकोण और पाश्चात्य दृष्टिकोण में मूलभूत अन्तर है। परन्तु दर्शन की मूलभूत सर्वसम्मत परिभाषा होनी चाहिये- दर्शन ज्ञान की वह शाखा है, जिसमें सम्पूर्ण ब्रह्म्राण्ड एवं मानव के वास्तविक स्वरूप सृष्टि-सृष्टा, आत्मा-परमात्मा, जीव-जगत, ज्ञान-अज्ञान, ज्ञान प्राप्त करने के साधन और मनुष्य के करणीय और अकरणीय कर्मोर्ं का तार्किक विवेचेचन किया जाता है।। इस परिभाषा में प्राकृतिक, सामाजिक, अनात्मवादी व आत्मवादी और सभी दर्शन आ जाते है, और दर्शन के अर्थ प्रतिबिम्बित होते हैं-

2.2 दर्शन की परिभाषा

हम यह कह सकते हैं कि दर्शन का सम्बधं ज्ञान से है और दर्शन ज्ञान को व्यक्त करता है। हम दर्शन के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने हेतु कुछ परिभाषायें दे रहे हैं।

1. बरट्रेरड रसेल- ''अन्य विधाओं के समान दर्शन का मुख्य उद्देश्य-ज्ञान की प्राप्ति है।''

2. आर0 डब्लू सेलर्स-''दर्शन एक व्यवस्थित विचार द्वारा विश्व और मनुष्य की प्रकृति के विषय में ज्ञान प्राप्त करने का निरन्तर प्रयत्न है।''

3. जॉॅन डी0वी0 का कहना है- ''जब कभी दर्शन पर गम्भीरतापवू के विचार किया गया है तो यही निश्चय हुआ कि दर्शन ज्ञान प्राप्ति का महत्व प्रकट करता है जो ज्ञान जीवन के आचरण को प्रभावित करता है।''

4. हैन्डर्सन के अनुसार- ''दर्शन कुछ अत्यन्त कठिन समस्याओ का कठारे नियंत्रित तथा सुरक्षित विश्लेषण है जिसका सामना मनुष्य करता है।

5. ब्राइटमैन ने दर्शन को थोड़े विस्तृत रूप में परिभाषित किया है - कि दर्शन की परिभाषा एक ऐसे प्रयत्न के रूप में दी जाती है जिसके द्वारा सम्पूण्र मानव अनुभूतियों के विषय में सत्यता से विचार किया जाता है अथवा जिसके द्वारा हम अपने अनुभवों द्वारा अपनें अनुभवों का वास्तविक सार जानते हैं।

2.3 भारतीय दर्शन की सामान्य विशेषताएं

भारतीय दर्शन में आस्तिकतावादी तथा नास्तिकतावादी विचार, आध्यात्मिक तथा भौतिकवावादी, दोनों विचारधाराएं दृष्टिगत होती हैं। इन विचारधाराओं के आधार पर भारतीय दर्शन को विभाजित किया गया है। इनमें परस्पर अनके मतभेद हैं, तथापि इन दर्शनों में अनेक विचार एक समान तथा सर्वामान्य हैं। भारतीय दर्शन की सामान्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं!

(1) भारतीय दर्शन की उत्पत्ति मनुष्य के आध्यात्मिक असंतोष का परिणाम है। मनुष्य को अपने जीवन में अनेक दुखों का सामना करना पड़ता है। भारतीय दर्शन मनुष्य के लिए इस दुख से निवृत्ति का मार्ग प्रशस्त करता है, तथा दुख से निवृत्ति के लिए मोक्ष प्राप्ति को जीवन का चरम लक्ष्य मानता है। इस तरह भारतीय दर्शन व्यवहारिक दृष्टिकोण से चार्वाक के भौतिकतावादी दर्शन के अतिरिक्त मनुष्य की समस्याओं को हल करने की कोशिष करता है। डा. राधाकृष्णन ने लिखा भी है कि ''भारत में दर्शन जीवन के लिए है''।

(2) भारतीय दर्शन में अनैन्द्रिक अनुभूति [Non-sensuous Feeling]को केन्द्रिक अनुभूति [Sensuous Feeling], से श्रेष्ठ माना गया है! अनैन्द्रिक अनुभूति (आध्यात्मिक अनुभूति, Intuitive Feeling), बौद्धिक ज्ञान से श्रेष्ठ मानी गई है! आध्यात्मिक अनुभूति द्वारा ही तत्व का वास्वतिक साक्षात्कार होता है। चंकि भारतीय दर्शन में तत्व का साक्षात्कार प्राप्त करना लक्ष्य निर्धारित किया गया है इसलिए भारतीय दर्शन को तत्व दर्शन भी कहा जाता है।

(3) चार्वाक के भौतिकतावादी दर्षन के अतिरिक्त सभी भारतीय दर्षन आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं!

(4) चार्वाक के भौतिकतावादी दर्शन के अतिरिक्त, षड्दर्शन तथा जैन तथा बौद्ध दर्शन में मनुष्य के कर्म के सिधान्त को स्वीकार किया गया है। अर्थात् मनुष्य के वर्तमान कर्म उसके भावी जीवन का निर्धारण करते हैं, जबकि वर्तमान जीवन पूर्वजन्मों के कर्मों का प्रतिफल है। भारतीय दर्शन में 'कर्म सिधान्त' उसकी आध्यात्मिक विचारधारा की नींव कही जाती है !

(5) चार्वाक के अतिरिक्त सामान्यतः सभी भारतीय दर्शनों में पुनर्जन्म के सिधान्त को मान्यता दी गई है। पुनर्जन्म का विचार भारतीय दर्शन में कर्मवाद के सिधान्त तथा आत्मा की अमरता के विचार को प्रतिपुष्ट करता है। भारतीय दर्शन में स्वीकारा गया है कि मनुष्य की देह नाशवान है, परंतु आत्मा अमर है,तथा व्यक्ति को अपने वर्तमान कर्यों के आधार पर मृत्यु पश्चात् पुनर्जन्म प्राप्त होता है !

III. प्रमुख भारतीय दर्शन एवं महत्व

3.1 भारतीय दर्शन में छ: दर्शन प्रमुख है

- मीमांसा दर्शन

मीमांसा शब्द का अर्थ किसी वस्तु के स्वरूप का यथार्थ वर्णन है। वेद के मुख्यत: दो भाग हैं। प्रथम भाग में 'कर्मकाण्ड' बताया गया है, जिससे अधिकारी मनुष्य की प्रवृत्ति होती है। द्वितीय भाग में 'ज्ञानकाण्ड' बताया गया है, जिससे अधिकारी मनुष्य की निवृत्ति होती है। कर्म तथा ज्ञान के विषय में कर्ममीमांसा और वेदान्त की दृष्टि में अन्तर है। वेदान्त के अनुसार कर्मत्याग के बाद ही आत्मज्ञान संभव है। कर्म तो केवल चित्तशुद्धि का साधन है। मोक्ष की प्राप्ति तो ज्ञान से ही हो सकती है। परन्तु कर्ममीमांसा के अनुसार मुमुक्षुजन को भी कर्म करना चाहिए।

- वेदांत दर्शन

वेद के अन्तिम भाग को वेदान्त की संज्ञा से सुषोभित किया गया है जिसने उपनिषदों के विस्तृत स्वरूप कों एक अनुशासित ढंग से संजोया गया है महर्षि व्यास ने वेदान्त दर्शन में इसी प्रकार वेदों एंव उपनिषदो से सारगभित विद्या के स्वरूप को सुव्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत किया है वेदान्त के सूत्रों को बहमसूत्र भी कहा जाता है तथा वेदस्त सूत्र के नाम से भी जाना जाता है इन बह्मसूत्रों ने कुल 550 सूत्रों का संकलन है जिन पर श्री शंकराचार्य, श्री भास्कराचार्य, श्री रामानुजाचार्य, श्री मध्वाचार्य तथा श्री निम्बाकाचार्य द्वारा भाश्य किया गया है इन भाष्यकारों द्वारा इन ब्रह्मसूत्रों की विस्तृत रूप में व्याख्या की गयी है!

- न्याय दर्शन

महिर्ष अक्षपाद गौतम द्वारा प्रणीत न्याय दर्शन एक आस्तिक दर्शन है जिसमें ईश्वर कर्म-फल प्रदाता है। इस दर्शन का मुख्य प्रतिपाद्य विषय प्रमाण है। न्याय शब्द कई अर्थों में प्रयुक्त होता है परन्तु दार्शनिक साहित्य में न्याय वह साधन है जिसकी सहायता से किसी प्रतिपाद्य विषय की सिद्ध या किसी सिद्धान्त का निराकरण होता है-

नीयते प्राप्यते विविक्षितार्थ सिद्धिरनेन इति न्याय:।।

- वैशेषिक दर्शन

इस दर्शन का नाम कणाद और औलूक्य भी है | वैशेषिक का अर्थ है पदार्थों में भेदों का बोधक, और पदार्थ उसे कहते हैं जो प्रतीति से सिद्ध हो | विशेष नामक पदार्थ की विशिष्ट कल्पना करने के कारण इसको वैशेषिक संज्ञा प्राप्त हुई है |

- सांख्य दर्शन

सॉख्य दर्शन के प्रणेता कपिल है यहॉ पर सांख्य शब्द अथवा ज्ञान के अर्थ में लिया गया है! परंपरा के अनुसार उक्त आसुरि को निर्माणचित्त में अधिष्ठित होकर इन्होंने तत्वज्ञान का उपदेश दिया था। निर्माणचित्त का अर्थ होता है सिद्धि के द्वारा अपने चित्त को स्वेच्छा से निर्मित कर लेना। इससे मालूम होता है, कपिल ने आसुरि के सामने साक्षात् उपस्थित होकर उपदेश नहीं दिया अपितु आसुरि के ज्ञान में इनके प्रतिपादित सिद्धांतों का स्फुरण हुआ, अत: ये 'आसुरि' के गुरु कहलाए। महाभारत में ये सांख्य के वक्ता कहे गए हैं। इनको अग्नि का अवतार और ब्रह्मा का मानसपुत्र भी पुराणों में कहा गया है।

- योग दर्शन

योग दर्शन के आदि आचार्य हिरण्यगर्भ है | हिरण्यगर्भ – सूत्रों के आधार पर (जो इस समय लुप्त है) पतञ्जलि मुनि ने योग दर्शन का निर्माण किया |योगदर्शन के चार पाद है और १९५ सूत्र है | समाधिपाद में ५१, साधनपाद में ५५, विभूतिपाद में ५५ और केवल्यपाद में ३४ |

- जैन दर्शन

जैन दर्शन एक प्राचीन भारतीय दर्शन है। इसमें अहिंसा को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। जैन धर्म की मान्यता अनुसार 24 तीर्थंकर समय-समय पर संसार चक्र में फसें जीवों के कल्याण के लिए उपदेश देने इस धरती पर आते है। लगभग छठी शताब्दी ई॰ पू॰ में अंतिम तीर्थंकर, भगवान महावीर के द्वारा जैन दर्शन का पुनराव्रण हुआ । इसमें वेद की प्रामाणिकता को कर्मकाण्ड की अधिकता और जड़ता के कारण मिथ्या बताया गया। जैन दर्शन के अनुसार जीव और कर्मो का यह सम्बन्ध अनादि काल से है। जब जीव इन कर्मो को अपनी आत्मा से सम्पूर्ण रूप से मुक्त कर देता हे तो वह स्वयं भगवान बन जाता है। लेकिन इसके लिए उसे सम्यक पुरुषार्थ करना पड़ता है। यह जैन धर्म की मौलिक मान्यता है।

- बौद्ध दर्शन

बौद्ध दर्शन से अभिप्राय उस दर्शन से है जो भगवान बुद्ध के निर्वाण के बाद बौद्ध धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों द्वारा विकसित किया गया और बाद में पूरे एशिया में उसका प्रसार हुआ। 'दुःख से मुक्ति' बौद्ध धर्म का सदा से मुख्य ध्येय रहा है। कर्म, ध्यान एवं प्रज्ञा इसके साधन रहे हैं।

IV. निष्कर्ष

संस्कृति शब्द की उत्पत्ति, संस्कृत शब्द से हुई है ! संस्कार का अर्थ है, मनुष्य द्वारा कुछ कार्यों का अपने जीवन में किया जाना। विभिन्न संस्कारो द्वारा मनुष्य अपने सामूहिक जीवन के उद्देष्यों की प्राप्ति करता है। इन संस्कारों से ही मनुष्य की संस्कृति निर्मित होती है। मनुष्य के सामूहिक जीवन के उद्देष्यों में भौतिक तथा अभौतिक घटक होते हैं।

भौतिक घटक के अंतर्गत मनुष्य की भौतिक उपलब्धियां आते हैं जो मनुष्य के जीवन को आसान बनाते है। अभौतिक घटक के अंतर्गत सामाजिक मान्यताएं, रीतिरिवाज, साहित्य, कला, नैतिकता मूल्य, आदि आते हैं।

भौतिक तथा अभौतिक घटक मनुष्य की संस्कृति का निर्माण करते हैं। संस्कृति के दोनों ही घटक दर्शन द्वारा प्रभावित होते हैं। वस्तुतः संस्कृति और दर्शन परस्पर एक दूसरे को प्रभावित करते है, परिणामस्वरूप उनका विकास भी होता है, तथा परिवर्तन भी होता है!

किसी भी समाज का सांस्कृतिक विकास, तथा दर्शन का विकास समांतर प्रक्रिया है, अर्थात दोनों का विकास साथ साथ होता है। दर्शन के प्रगतिशील होने पर समाज की सांस्कृतिक अवस्था भी प्रगतिशील होती है, तथा संस्कृति के भौतिक तथा अभौतिक घटकों का व्यापक विकास होता है।

दर्शन के आधार पर ही वह समाज अपने सामाजिक मूल्यों, नैतिक मापदण्डों, रीति रिवाजों, सामाजिक व्यवहारों, तथा व्यक्तिगत और सामूहिक विश्वासों का निर्धारण और नियमन करता है। साहित्य, कला, संगीत और भाषा भी दर्शन से मार्गदर्शन प्राप्त करती है, ताकि वह समाज के आंतरिक सौंदर्य को व्यक्त कर सके।

V. सन्दर्भ सूची

[1]. भारतीय दर्शन-एच.पी .सिन्हा

[2]. अद्वेत और विशिष्टाद्वेत वेदांत -डॉ .डी.एम .सिह

[3]. भारतीय दर्शन और परम्परा-बी.एल.शर्मा

[4]. भारतीय दर्शन की रूप रेखा -प्रो .हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा

[5]. भारतीय योग परम्परा के विभिन्न आयाम-राजकुमारी पाण्डे-राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली।

[6]. भगवद्गीता-ए.सी .भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद भक्तिवेदान्त ट्रस्ट जुहू बॉम्बे 1982।

[7]. संस्कार -आचार्य श्री राम शर्मा आर्चा गायत्री तपोभूमि मथुरा उ.प्र.।

[8]. ज्ञानगंगोत्री , संकलन एवं संपादनः, लीलाधर शर्मा पाण्डेय, मिल्स, अमलाई, म .प्र.

[9]. वामन शिवराम आष्टे , अशोक प्रकाशन दिल्ली

[10]. भारतीय दर्शन शास्त्र का इतिहास , लेखक हरिदत्त शास्त्री , साहित्य भंडार मेरठ

[11]. भारतीय दर्शन की रूपरेखा

[12]. www.rojorai.in

[13]. www.healthunbox.com

[14]. www.scotbbuzz.org

[15]. www.hindi essay.com

[16]. www.jkhealth world.com